ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class -VI

Subject- Hindi Second Language

Topic- ऐसे-ऐसे (एकांकी)

Anu Bala

Topic - ऐसे-ऐसे

एकांकी

कक्षा
6
पाठ-8
ऐसे-ऐसे
ऐसे - ऐसे
एकांकी (नाटक)
पात्र-परिचय
मोहन : एक विद्यार्थी
दीनानाथ : एक पड़ोसी
माँ : मोहन की माँ
पिता : मोहन के पिता
मास्टर : मोहन के मास्टर जी।
डॉक्टर तथा एक पड़ोसिन।
NCERT

पात्र-परिचय

मोहन	:	एक विद्यार्थी
दीनानाथ	:	एक पड़ोसी
माँ	:	मोहन की माँ
पिता	:	मोहन के पिता
मास्टर	:	मोहन के मास्टर जी।

वैद्य जी, डॉक्टर तथा एक पड़ोसिन।

© NCERT not to be republished

पात्र – characters
परिचय – information
पड़ोसिन –female neighbour

SuccessCDs

'ऐसे – ऐसे'

विष्णु प्रभाकर हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक के रूप में विख्यात हुए। उनका जन्म उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के गांव मीरापुर में हुआ था।

ऐसे-ऐसे - विष्णु प्रभाकर-

https://www.youtube.com/watch?v=QM8EZda0mQA

पाठ-परिचय – प्रस्तुत एकांकी (a one act play) विष्णु प्रभाकर जी की रचना है। इस एकांकी के माध्यम से उन्होंने बताया है कि जब बच्चों का विद्यालय का कार्य पूरा नहीं होता तो वह कैसे-कैसे बहाने बनाते हैं। इस एकांकी में एक बच्चा काम पूरा न होने पर पेट दर्द का बहाना करता है। डॉक्टर, वैद्य सभी उसको देखने आते हैं। अपनी-अपनी राय बता कर चले जाते हैं। अंत में अध्यापक आकर उसकी बीमारी को पकड़ता है।

एकांकी के प्रमुख पात्र –

'ऐसे-ऐसे' एक एकांकी है। इस एकांकी के प्रमुख पात्र हैं - मोहन एक विद्यार्थी, दीनानाथ एक पड़ोसी. मोहन की माँ, मोहन के पिता, मास्टर जी, वैद्य जी, डॉक्टर और एक पडोसिन।

एकांकी -(a one act play) बहाने-excuses पेट दर्द – stomachache राय - opinion

(सड़क के किनारे एक सुंदर फ्लैट में बैठक का दृश्य। उसका एक दरवाज़ा सड़कवाले बरामदे में खुलता है, दूसरा अंदर के कमरे में, तीसरा रसोईघर में। अलमारियों में पुस्तकें लगी हैं। एक ओर रेडियो का सेट है। दो ओर दो छोटे तख्त हैं, जिन पर गलीचे बिछे हैं। बीच में कुरसियाँ हैं। एक छोटी मेज़ भी है। उस पर फ़ोन रखा है। परदा उठने पर मोहन एक तख्त पर लेटा है। आठ-नौ वर्ष के लगभग उम्र होगी उसकी। तीसरी क्लास में पढ़ता है। इस समय बड़ा बेचैन जान पड़ता है। बार-बार पेट को पकड़ता है। उसके माता-पिता पास बैठे हैं।)

माँ : (पुचकारकर) न-न, ऐसे मत कर! अभी ठीक हुआ जाता है। अभी डॉक्टर को बुलाया है। ले, तब तक सेंक ले। (चादर हटाकर पेट पर बोतल रखती

सड़क का किनारा-the roadside
बैठक -बैठने का कमरा-sitting room
बरामदा- balconyतख्त- a bench
गलीचे- a small carpet परदा उठना- to be unveiled , to raise the curtain (from) बेचैन- परेशान –forlorn , distress , worried
पुचकारकर- to pat ,to fondl
सेंकना –गरम पानी की भाप देना – warming,heating

है। *फिर मोहन के पिता की ओर मुड़ती है।)* इसने कहीं कुछ अंट-शंट तो नहीं खा लिया?

पिता : कहाँ? कुछ भी नहीं। सिर्फ़ एक केला और एक संतरा खाया था। अरे, यह तो दफ़्तर से चलने तक कूदता फिर रहा था। बस अड्डे पर आकर यकायक बोला – पिता जी, मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है।

माँ : कैसे?

पिता : बस 'ऐसे-ऐसे' करता रहा। मैंने कहा – अरे, गड़गड़ होती है? तो बोला – नहीं। फिर पूछा – चाकू-सा चुभता है? तो जवाब दिया – नहीं। गोला-सा फूटता है? तो बोला – नहीं। जो पूछा उसका जवाब – नहीं। बस एक ही रट लगाता रहा, कुछ 'ऐसे-ऐसे' होता है।

अंट-शंट-ऐसी-वैसी चीजें- wretch irrelevant , bad ; nondescript
यकायक-अचानक- suddenly
गड़गड़-पेट की आवाज़-rumbling in the stomach
चुभना- to pierce
फूटना- to burst
रट लगाना-एक ही बात बार-बार कहना- to repeat the same

पिता : अजी, एकदम सफ़ेद पड़ गया था। खड़ा नहीं रहा गया। बस में भी नाचता रहा — मेरे पेट में 'ऐसे–ऐसे' होता है। 'ऐसे–ऐसे' होता है।

मोहन : (*ज़ोर से कराहकर*) माँ! ओ माँ!

माँ : न–न मेरे बेटे, मेरे लाल, ऐसे नहीं। अजी, ज़रा देखना, डॉक्टर क्यों नहीं आया! इसे तो कुछ ज़्यादा ही तकलीफ़ जान पड़ती है। यह 'ऐसे–ऐसे' तो कोई बड़ी खराब बीमारी है। देखो न, कैसे लोट रहा है! ज़रा भी कल नहीं पड़ती। हींग, चूरन, पिपरमेंट — सब दे चुकी हूँ। वैद्य जी आ जाते!

कराहकर – to moan , to groan
तकलीफ़ - कष्ट - pain
खराब - bad,miserable
लोटना – rolling about
कल पड़ना - आराम मिलना – to obtain ease or relief
हींग – asafoetida
चूरन – a digestive powder
वैद्य –An Ayurvedic doctor

(तभी फ़ोन की घंटी बजती है। मोहन के पिता उठाते हैं।)

पिता : यह 43332 है। जी, जी हाँ। बोल रहा हूँ...कौन? डॉक्टर साहब! जी हाँ, मोहन के पेट में दर्द है...जी नहीं, खाया तो कुछ नहीं. ..बस यही कह रहा है...बस जी ...नहीं, गिरा भी नहीं...'ऐसे-ऐसे' होता है।

गिरना- to fall down
पेट दर्द – stomachache

बस जी, 'ऐसे–ऐसे' होता है। बस जी, 'ऐसे–ऐसे!' यह 'ऐसे–ऐसे' क्या बला है, कुछ समझ में नहीं आता। जी...जी हाँ! चेहरा एकदम सफ़ेद हो रहा है। नाचा. ..नाचता फिरता है...जी नहीं, दस्त

बला – मुसीबत –calamity ,trouble
चेहरा एकदम सफ़ेद होना –बहुत कमज़ोर होना
– the face to fall , weak
दस्त -diarrhoea

तो नहीं आया...जी हाँ, पेशाब तो आया था...जी नहीं, रंग तो नहीं देखा। आप कहें तो अब देख लेंगे...अच्छा जी! ज़रा जल्दी आइए। अच्छा जी, बड़ी कृपा है। (*फ़ोन का चोंगा रख देते हैं।*) डॉक्टर साहब चल दिए हैं। पाँच मिनट में आ जाते हैं।

(*पड़ोस के लाला दीनानाथ का प्रवेश। मोहन ज़ोर से कराहता है।*)

मोहन : माँ...माँ...ओ...ओ...(*उलटी आती है। उठकर नीचे झुकता है। माँ सिर पकड़ती है। मोहन तीन-चार बार 'ओ-ओ' करता है। थूकता है, फिर लेट जाता है।*) हाय, हाय!

माँ : (*कमर सहलाती हुई*) क्या हो गया? दोपहर को भला-चंगा गया था। कुछ समझ में नहीं आता! कैसा पड़ा है! नहीं तो मोहन भला कब पड़ने वाला है! हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है।

चोंगा – फ़ोन का रिसीवर telephone receiver प्रवेश -आगमन -आना-entry
उलटी - vomiting कमर सहलाना – stroking the waist
भला -चंगा -ठीक-ठाक ingood health - healthy
थूकना – to spit

दीनानाथ : अजी, घर क्या, पड़ोस को भी गुलज़ार किए रहता है। इसे छेड़, उसे पछाड़; इसके मुक्का, उसके थप्पड़। यहाँ–वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन।

पिता : बड़ा नटखट है।

माँ : पर अब तो बेचारा कैसा थक गया है! मुझे तो डर है कि कल स्कूल कैसे जाएगा!

दीनानाथ : जी हाँ, कुछ बड़ी तकलीफ़ है, तभी तो पड़ा। मामूली तकलीफ़ को तो यह कुछ समझता नहीं। पर कोई डर नहीं। मैं वैद्य जी से कह आया हूँ। वे आ ही रहे हैं। ठीक कर देंगे।

मोहन : (*तेज़ी से कराहकर*) अरे....रे–रे–रे....ओह!

माँ : (*घबराकर*) क्या है, बेटा? क्या हुआ?

मोहन : (*रुआँसा–सा*) बडे ज़ोर से ऐसे–ऐसे होता है। ऐसे–ऐसे।

गुलज़ार- चहल-पहल – to creat a bustle
छेड़ना - to touch पछाड़- गिराना – throw
मुक्का- the fistनटखट – चंचल naughty
कराहकर – to moan , to groan
घबराकर - to be flustered , haveing fear , agitation
रुआँसा –सा – रोने जैसी सूरत -tearful

मोहन : (*रुआँसा-सा*) बड़े ज़ोर से ऐसे-ऐसे होता है। ऐसे-ऐसे।

माँ : ऐसे कैसे, बेटे? ऐसे क्या होता है?

मोहन : ऐसे-ऐसे। (*पेट दबाता है।*)

(*वैद्य जी का प्रवेश।*)

वैद्य जी : कहाँ है मोहन? मैंने कहा, जय राम जी की! कहो बेटा, खेलने से जी भर गया क्या? कोई धमा-चौकड़ी करने को नहीं बची है क्या?

(*सब उठकर हाथ जोड़ते हैं। वैद्य जी मोहन के पास कुरसी पर बैठ जाते हैं।*)

© NCERT not to be republished

धमा –चौकड़ी –उछल –कूद
– turmoil , row brawl

पिता : वैद्य जी, शाम तक ठीक था। दफ़्तर से चलते वक्त रास्ते में एकदम बोला—मेरे पेट में दर्द होता है। 'ऐसे-ऐसे' होता है। समझ नहीं आता, यह कैसा दर्द है!

वैद्य जी : अभी बता देता हूँ। असल में बच्चा है। समझा नहीं पाता है। *(नाड़ी दबाकर)* वात का प्रकोप है...मैंने कहा, बेटा, जीभ तो दिखाओ। *(मोहन जीभ निकालता है।)* कब्ज़ है। पेट साफ़ नहीं हुआ। *(पेट टटोलकर)* हूँ, पेट साफ़ नहीं है। मल रुक जाने से वायु बढ़ गई है। क्यों बेटा? *(हाथ की उँगलियों को फैलाकर फिर सिकोड़ते हैं।)* ऐसे-ऐसे होता है?

मोहन : *(कराहकर)* जी हाँ...ओह!

नाड़ी – the pulse
वात – शरीर में रहने वाली वायु के बढ़ने का रोग – wind as a bodily humour
प्रकोप – बहुत अधिक बढ़ा हुआ होना violent outbreak of a disease
कब्ज़ - constipation टटोलकर - Investigate मल –excrement ,सिकोड़ना – to squeeze

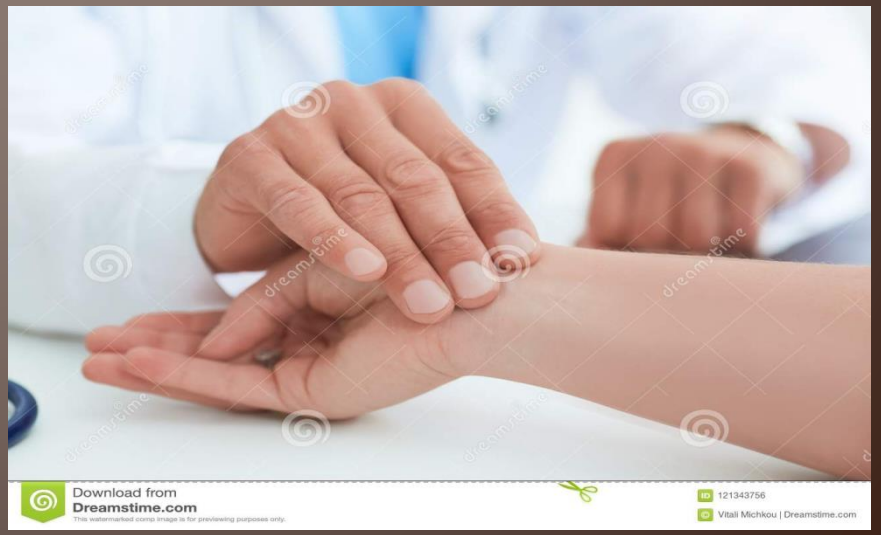

वैद्य जी : *(हर्ष से उछलकर)* मैंने कहा न, मैं समझ गया। अभी पुड़िया भेजता हूँ। मामूली बात है, पर यही मामूली बात कभी-कभी बड़ों-बड़ों को छका देती है। समझने की बात है। मैंने कहा, आओ जी, दीनानाथ जी, आप ही पुड़िया ले लो। *(मोहन की माँ से)* आधे-आधे घंटे बाद गरम पानी से देनी है। दो-तीन दस्त होंगे। बस फिर 'ऐसे-ऐसे' ऐसे भागेगा जैसे गधे के सिर से सींग!

(वैद्य जी द्वार की ओर बढ़ते हैं। मोहन के पिता पाँच का नोट निकालते हैं।)

पिता : वैद्य जी, यह आपकी भेंट। *(नोट देते हैं।)*

वैद्य जी : *(नोट लेते हुए)* अरे मैंने कहा, आप यह क्या करते हैं? आप और हम क्या दो हैं?

(अंदर के दरवाज़े से जाते हैं। तभी डॉक्टर प्रवेश करते हैं।)

ऐसे भागना जैसे गधे के सिर से सींग – एकदम गायब हो जाना –fully disappeared
भेंट -उपहार - gift

डॉक्टर : हैलो मोहन! क्या बात है? 'ऐसे-ऐसे' क्या कर लिया?

(माँ और पिता जी फिर उठते हैं। मोहन कराहता है। डॉक्टर पास बैठते हैं।)

पिता : डॉक्टर साहब, कुछ समझ में नहीं आता।

डॉक्टर : *(पेट दबाने लगते हैं।)* अभी देखता हूँ। जीभ तो दिखाओ बेटा। *(मोहन जीभ निकालता है।)* हूँ, तो मिस्टर, आपके पेट में कैसे होता है? ऐसे-ऐसे?

(मोहन बोलता नहीं, कराहता है।)

माँ : बताओ, बेटा! डॉक्टर साहब को समझा दो।

मोहन : जी...जी...ऐसे-ऐसे। कुछ ऐसे-ऐसे होता है। *(हाथ से बताता है। उँगलियाँ भींचता है।)* डॉक्टर, तबीयत तो बड़ी खराब है।

भींचता – to press , to squeeze , to hold tightly

तबीयत – state of heath

डॉक्टर : *(सहसा गंभीर होकर)* वह तो मैं देख रहा हूँ। चेहरा बताता है, इसे काफ़ी दर्द है। असल में कई तरह के दर्द चल पड़े हैं। कौलिक पेन तो है नहीं। और फोड़ा भी नहीं जान पड़ता। *(बराबर पेट टटोलता रहता है।)*

माँ : *(काँपकर)* फोड़ा!

डॉक्टर : जी नहीं, वह नहीं है। बिलकुल नहीं है। *(मोहन से)* ज़रा मुँह फिर खोलना। जीभ निकालो। *(मोहन जीभ निकालता है।)* हाँ, कब्ज़ ही लगता है। कुछ बदहज़मी भी है। *(उठते हुए)* कोई बात नहीं। दवा भेजता हूँ। *(पिता से)*

गंभीर – serious
कौलिक पेन – colic pain
फोड़ा – a boil , sore
बराबर –exact
पेट टटोलना – to test by feeling
काँपकर- to shiver
कब्ज – constipation
बदहज़मी-indigestion

क्यों न आप ही चलें! मेरा विचार है कि एक ही खुराक पीने के बाद तबीयत ठीक हो जाएगी। कभी-कभी हवा रुक जाती है और फंदा डाल लेती है। बस उसी की ऐंठन है।

(डॉक्टर जाते हैं। मोहन के पिता दस का नोट लिए पीछे-पीछे जाते हैं और डॉक्टर साहब को देते हैं।)

माँ : सेंक तो दूँ, डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : (दूर से) हाँ, गरम पानी की बोतल से सेंक दीजिए।

(डॉक्टर जाते हैं। माँ बोतल उठाती है। पड़ोसिन आती है।)

पड़ोसिन : क्यों मोहन की माँ, कैसा है मोहन?

खुराक – दवा खाने की मात्रा single dose of medicine

फंदा – trap

ऐंठन –twist , stiffness

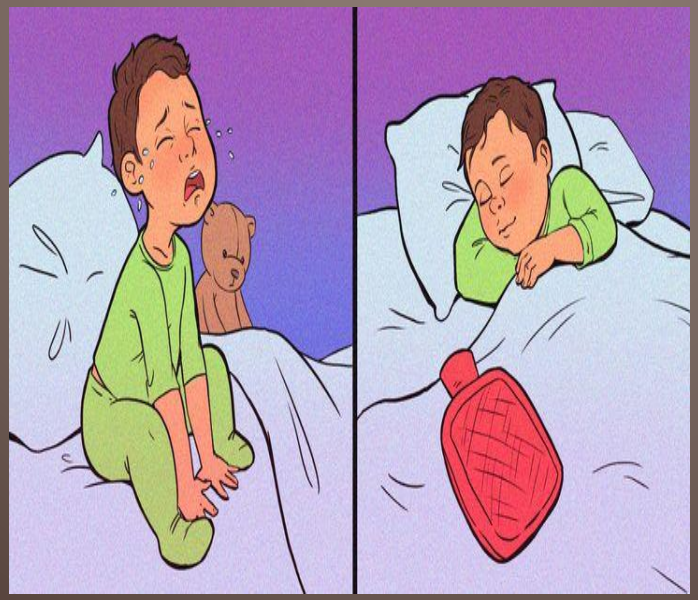

पड़ोसिन : ना जी, इत्ती नयी-नयी बीमारियाँ निकली हैं। देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा। राम मारी बीमारियों ने तंग कर दिया। नए-नए बुखार निकल आए हैं। वह बात है कि खाना-पीना तो रहा नहीं।

माँ : डॉक्टर कहता है कि बदहज़मी है। आज तो रोटी भी उनके साथ खाकर गया था। वहाँ भी कुछ नहीं खाया। आजकल तो बिना खाए बीमारी होती है। (*बाहर से आवाज़ आती है*–'मोहन! मोहन!'। *फिर मास्टर जी का प्रवेश होता है।*)

माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं। (*पुकारकर*) आ जाइए!

बदहज़मी – अपच -indigestion
पुकारकर –to call out

माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं। (*पुकारकर*) आ जाइए!

मास्टर : सुना है कि मोहन के पेट में कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है! क्यों, भाई? (*पास आकर*) हाँ, चेहरा तो कुछ उतरा हुआ है। दादा, कल तो स्कूल जाना है। तुम्हारे बिना तो क्लास में रौनक ही नहीं रहेगी। क्यों माता जी, आपने क्या खिला दिया था इसे?

माँ : खाया तो बेचारे ने कुछ नहीं।

मास्टर : तब शायद न खाने का दर्द है। समझ गया, उसी में 'ऐसे-ऐसे' होता है।

माँ : पर मास्टर जी, वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा भेजेंगे।

चेहरा उतरना – the face to fall

रौनक- elegance , grace

मास्टर : माता जी, मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर के पास नहीं है। इसकी 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी को मैं जानता हूँ। अकसर मोहन जैसे लड़कों को वह हो जाती है।

माँ : सच! क्या बीमारी है यह?

मास्टर : अभी बताता हूँ। (*मोहन से*) अच्छा साहब! दर्द तो दूर हो ही जाएगा। डरो मत। बेशक कल स्कूल मत आना। पर हाँ, एक बात तो बताओ, स्कूल का काम तो पूरा कर लिया है?

(*मोहन चुप रहता है।*)

माँ : जवाब दो, बेटा, मास्टर जी क्या पूछते हैं।

मास्टर : हाँ, बोलो बेटा।

(*मोहन कुछ देर फिर मौन रहता है। फिर इनकार में सिर हिलाता है।*)

बेशक –बिना किसी शक(संदेह) के –
मौन रहना – चुप्पी to keep silent
इनकार – मना rejection
सिर हिलाना- to shake the head in disagreement

मोहन : जी, सब नहीं हुआ।

मास्टर : हूँ! शायद सवाल रह गए हैं।

मोहन : जी!

मास्टर : तो यह बात है। 'ऐसे-ऐसे' काम न करने का डर है।

माँ : *(चौंककर)* क्या?

(मोहन सहसा मुँह छिपा लेता है।)

मास्टर : *(हँसकर)* कुछ नहीं, माता जी, मोहन ने महीना भर मौज की। स्कूल का काम रह गया। आज खयाल आया। बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा—'ऐसे-ऐसे'! अच्छा, उठिए साहब! आपके 'ऐसे-ऐसे' की दवा मेरे पास है। स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी। आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा। *(मोहन उसी तरह मुँह छिपाए रहता है।)* अब उठकर सवाल शुरू कीजिए। उठिए, खाना मिलेगा।

सवाल – प्रश्न - question
चौंककर – to surrprised
सहसा –अचानक suddenly
मुहँ छिपाना – hiding the face
मौज करना – मस्ती करना to enjoy oneself without restraint
ख्याल आना – याद आना – a thought to occur

रहता है।) अब उठकर सवाल शुरू कीजिए। उठिए, खाना मिलेगा।

(मोहन उठता है। माँ ठगी-सी देखती है। दूसरी ओर से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं।)

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है। हमारी तो जान निकल गई। पंद्रह-बीस रुपए खर्च हुए, सो अलग। (*पिता से*) देखा जी आपने!

पिता : (*चकित होकर*) क्या-क्या हुआ?

माँ : क्या-क्या होता! यह 'ऐसे-ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है।

उठकर – to stand up
ठगी – सी – हैरान –surprised
पेट में दाड़ी होना – चालाक होना clever
जान निकल जाना – going to die
खर्च होना- to be spent

पिता : हें!

(दवा की शीशी हाथ से छूटकर फ़र्श पर गिर पड़ती है। एक क्षण सब ठगे-से मोहन को देखते हैं। फिर हँस पड़ते हैं।)

दीनानाथ : वाह, मोहन, वाह!

पिता : वाह, बेटा जी, वाह! तुमने तो खूब छकाया!

(एक अट्टहास के बाद परदा गिर जाता है।)

शीशी –bottle
हाथ से छूटकर – out of hand
एक क्षण – a moment
ठगा-सा – हैरान surprised
खूब छकाना – मूर्ख बनाना to make fool of
अट्टहास – बहुत ज़ोर की हँसी –loud laughter
-

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -1- मोहन ने पिता के दफ़्तर में क्या खाया था?
उत्तर- मोहन ने पिता के दफ़्तर में एक केला और एक संतरा खाया था।

प्रश्न -2- वैद्य जी को बुलाकर कौन लाया?
उत्तर- मोहन के पड़ोसी दीनानाथ जी वैद्य जी को बुलाकर लाए थे।

प्रश्न -3- मोहन को वात का प्रकोप है- यह कारण वैद्य जी ने कैसे जाना?
उत्तर- वैद्य जी मोहन की नाड़ी दबाकर जाना ।

प्रश्न -4- मोहन ने स्कूल न जाने के लिए क्या बहाना बनाया?
उत्तर- मोहन ने स्कूल न जाने के लिए बहाना बनाया कि उसके पेट में 'ऐसे-ऐसे' दर्द हो रहा है।

प्रश्न -5-क्या मोहन के पेट में सचमुच दर्द था?
उत्तर-नहीं,मोहन के पेट में कोई दर्द नहीं था।वह केवल बहाना कर रहा था।

'

प्रश्न -6- मोहन के उपचार में पिता जी के कितने रुपए खर्च हुए ?
उत्तर-मोहन के उपचार में पिता जी के पन्द्रह रुपए खर्च हुए ।

प्रश्न -7- मोहन कैसा लड़का था ?
उत्तर- मोहन एक शरारती लड़का था ।

प्रश्न - 8- मोहन की माँ की चिंता का क्या कारण था?
उत्तर मोहन की माँ की चिंता का कारण था किसी नई बीमारी की आशंका।

प्रश्न -9- डॉक्टर के अनुसार मोहन को कौन-सी बीमारी थी ?
उत्तर- डॉक्टर के अनुसार मोहन को बदहज़मी हो गई थी।

प्रश्न -10- मोहन ने महीने भर मौज़ क्यों की ?
उत्तर - मोहन ने महीने भर मौज़ स्कूल में छुट्टियाँ होने के कारण की।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. माँ मोहन के 'ऐसे-ऐसे' कहने पर क्यों घबरा रही थी?
उत्तर- माँ का घबराना स्वाभाविक था क्योंकि मोहन कुछ बताता ही नहीं था बस ऐसे-ऐसे किए जा रहा था। माँ ने सोचा पता नहीं यह कौन-सी बीमारी है और कितनी भयंकर है। इसलिए मोहन की माँ घबरा गई थी।
प्रश्न 2. ऐसे कौन-कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार सुनकर समझ जाते हैं? ऐसे कुछ बहानों के बारे में लिखो।
उत्तर- पेट दर्द, सिर दर्द, बुखार, माता-पिता के साथ कहीं जाना, माता-पिता द्वारा किसी काम के लिए कहा जाना, शादी में जाना, बस छूट जाने का बहाना, माँ की बीमारी का बहाना इत्यादि।
प्रश्न 3. क्या आप स्कूल का काम न करने पर उल्टे-सीधे बहाने बनाते हो?
उत्तर- नहीं, मैं स्कूल का काम नहीं कर पाने पर कोई बहाना नहीं बनाता। मैं माँ को साफ़-साफ़ बता देता हूँ कि आज मैं स्कूल न जाकर गृह कार्य पूरा करूँगा। तभी अगले दिन स्कूल जाऊँगा। मुझे झूठ बोलना कतई पसंद नहीं है।
प्रश्न 4. वैद्य जी ने मोहन को देखने के बाद क्या कहा ?
उत्तर- वैद्य जी मोहन को देखकर कहा कि घबराने की कोई बात नहीं। मामूली बात है, पर इससे कभी-कभी बड़े भी तंग आ जाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मोहन की हालत देख माँ क्यों अधिक परेशान थी?

उत्तर-मोहन की हालत देखकर मोहन की माँ ने मोहन को हींग, चूरन, पिपरमेंट आदि दिया था, पर मोहन ठीक नहीं हुआ था। वह बार-बार कहता था कि उसके पेट में ऐसे-ऐसे हो रहा है। माँ उसकी हालत देखकर परेशान थी क्योंकि मोहन को क्या हो रहा है, यह पता नहीं चल रहा था। उसने 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी का नाम न सुना था। वह सोच में पड़ गई थी कि उसे कोई नई बीमारी तो नहीं हो गई है इसीलिए वह मोहन की हालत देखकर परेशान थी।

प्रश्न -ऐसे- ऐसे अध्याय से हमें क्या शिक्षा मिलती है वर्णन कीजिए।

उत्तर- ऐसे- ऐसे अध्याय से हमें झूठ ना बोलने तथा समय पर कार्य करने की शिक्षा मिलती है। मोहन एक शरारती तथा लापरवाह लड़का है। वह पूरे महीने आराम से खेल - कूद कर छुट्टियाँ बिताता रहा और पढ़ाई की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। जिससे उसे अपने माता-पिता से झूठ बोलना पड़ा और बीमारी का बहाना बनाना पड़ा। हमें कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए झूठ बोलना हमारे लिए खतरनाक साबित हो सकता है। यदि मोहन अपने माता-पिता से झूठ बोलता रहता और अध्यापक नहीं आते तो उसके माता-पिता परेशान रहते और उसे अलग-अलग दवाइयां खिलाते रहते जिससे उसके शरीर को नुकसान पहुँच सकता था ।

प्रश्न 3.ऐसे कौन-कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं। ऐसे कुछ बहानों के बारे में लिखो।

उत्तर - ऐसे अनेक बहाने होते हैं; जैसे-आज स्कूल में कुछ नहीं होगा, बस सफ़ाई कराई जाएगी। कुछ छात्र कहते हैं कि मैं रात में पढ़ाई कर रहा था मेरी किताब और कॉपी वहीं छूट गई। कभी-कभी छात्र दूर के रिश्तेदार की बीमारी का बहाना बना लेते हैं। इसके अलावा छात्र पेट दर्द, सिर दर्द, माता-पिता के साथ कहीं जाना, जिन्हें एक ही बार सुनकर मास्टर जी समझ जाते हैं।